नशे और अपराध में सिमटती युवाशक्ति

प्रस्तुतकर्त्री
डा. शीतल मीना सहआचार्य : राजनीति विज्ञान
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,अलवर
Email- mina.sheetal@gmail.com Mob. 9414689679

दुनिया में भारत की चर्चा विविध संद्र्भो में की जाती है। इन्ही में से एक हैं जनसंख्या लाभ में भारत का अग्रणी होना । किसी भी देष के लिए जनसंख्या लाभ की स्थिति तब होती हैं जब आबादी के बडे हिस्से को उत्पादक कार्यो में नियोजित कर उत्पादन का स्तर बढ़ाया जा सके। किसी भी राष्ट्र का भविष्य वहां के युवाओं से तय होता हैं। ऑखों में उम्मीद के सपने, नयी उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम और दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का सपना रखने वाला ही एक युवा की सही तस्वीर पेष करता हैं। लेकिन मौजूदा समय में समाज में जिस तरह कि घटनाऐं सामने आ रही हैं उससे राष्ट्र निर्माण में महती भूमिका अदा करने वाला युवा दिग्भ्रमित नजर आ रहा हैं और तेजी से अपराध की दुनिया में अपना वजूद तलाष रहा है। यदि हम विगत एक माह में सतना से लेकर पूरे प्रदेष में नजर दौड़ाए तो नजर होता हैं कि हत्या, लूट, बलात्कार, चोरी, ड़कैती, ब्लैक मेलिंग के अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ रहा हैं और युवा जिस प्रकार से इन घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं उससे इन अपराधों पर लगाम लगने की कोई सूरत नही नजर आ रही हैं किसी भी सभ्य समाज के लिए यह निष्चित रूप से चिंताजनक स्थिति हैं। ऐसे समाज में युवाओं में विवेकानंद के आदर्षो को पुनरूज्जीवन करना आवष्यक हो गया है।

बीज अक्षर– युवा, उत्पादक कार्यो, राष्ट्र निर्माण, हत्या, लूट, बलात्कार, चोरी, अपराध, चिंताजनक स्थिति विवेकानंद पुनरूज्जीवन आदि।

भारत, प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी अर्थात् स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के दिन राष्ट्रीय युवा दिवस मनाता है, इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी को स्वामी विवेकानंद जी के राष्ट्र की सनातन परम्परा पर गर्व करने, राष्ट्र भक्ति, समाज व मानव सेवा के लिए प्रेरित और प्रभावित करने वाले उच्च आदर्श विचारों, संदेशों, उपेदशों आदि के बारे में युवाओं में स्वाभिमान और दैदीप्यमान भाव का संचार करना. स्वामी जी के आदर्श विचार सदैव युवाओं के शक्तिपुंज, आदर्श तथा प्रेरणा स्रोत रहे हैं. संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1884 को अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया था, इसी के एवज में भारत सरकार ने वर्ष 1884 में घोषणा की थी कि प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी यानी स्वामी विवेकानंद जयती के दिन 'राष्ट्रीय युवा दिवस'के रूप में देशभर में सर्वत्र मनाया जाएगा, प्रथम बार राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी, 1885 को मनाया गया था. स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता महानगर के एक सम्भ्रान्त एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था, उनका पूर्वाश्रम का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त या 'नरेन' था, उनका परिवार दान, धर्म, शिक्षा, संस्कार और सामाजिक मूल्यों से ओतप्रोत था. स्वामी विवेकानन्द का जन्म भारत की धरा पर ऐसे वक्त में हुआ, जब राष्ट्र बिटिश साम्राज्य के अधीन था और भारत की तत्कालीन धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था आदि क्षेत्रों में व्यापक बदलाव के लिए बौद्धिक पुनर्जागरण का आन्दोलन अपने चरम पर था, इसी दौरान उन्होंने 11 सितम्बर, 1893 को शिकागो (सं.रा. अमरीका में सम्पन्न) विश्व धर्म महासभा में भारतीय सनातन परम्परा, अद्वैत वेदांत, योग दर्शन, संस्कृति और सभ्यता आदि की स्वाभाविक शक्ति एवं गरिमा की ओर पश्चिम का ध्यान आकर्षित किया, यहीं से भारतीय बौद्धिक पुनर्जागरण एवं स्वाधीनता आन्दोलन के लिए एक नई राह तैयार हुई. राष्ट्र का पुनर्जागरण प्रखर होता गया और भारत की स्वाधीनता की नींव पड़नी शुरू हो गई थी,

स्वामी विवेकानन्द जी ने पूर्व एवं पश्चिम के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए सेतु के तौर पर कार्य किया साथ ही राष्ट्र में धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं की विषमता के कारण उत्पन्न दुर्दशा, गरीबी, भुखमरी, दरिद्रता और असहाय लोगों तथा व्यापक स्तर पर युवाओं को प्रेरित करके उन्हें राष्ट्र एवं समाज सेवा के लिए तैयार किया. वर्षों से हाशिये पर जीवन जी रहे भारतीयों एवं पश्चिम ने उनके माध्यम से भारत की महान् 'सनातन परम्परा की वैभवशाली धरोहर को

समझा. यहीं से पश्चिम की भारत के प्रति धारणा बदलने लगी, एक राष्ट्र के रूप में भारत की महानता को दुनिया में विवेकानन्द के माध्यम से समझा गया था.स्वामी जी गहराई से महसूस करते थे कि भारतीय सनातन परम्परा की विरासत के अमर खजाने का पूरा विश्व बहुत बेसब्री से इंतजार कर रहा है.. वह अपने आप में एक साधारण संन्यासी नहीं थे, बल्कि सचमुच में भारत की धरती पर एक युगांतकारी युगदृष्टा, दार्शनिक, चिन्तक, धर्म एवं नैतिकता के सत्य, शाश्वत मूल्यों के प्रखर उपदेशक, पश्चिम में भारत के धर्म एवं सांस्कृतिक दूत, लेखक, प्रखर वक्ता, एक गुरु, क्रांतिकारी समाज सुधारक और युवाओं को स्वामी जी ने भारत भ्रमण (1888–1893) के दौरान बहुत करीब से युवाओं की दुर्दशा को देखा, उस समय युवाओं में सबसे बड़ी कमजोरी साहस, निडरता, निराशा और आत्मग्लानि के भाव दिखे, उन पर उन्हें मार्गदर्शन दिया. उन्होंने युवाओं से कहा, 'हमारी नसें फौलादी हों और शरीर लोहे का हो.' उन्होंने बल पर जोर दिया और कहा, निर्बलता पाप है. यह कहते हुए उन्होंने युवाओं को स्वयं में चार प्रकार के बल बढ़ाने के लिए प्रेरित किया–चरित्रबल, बाहुबल, मनोबल और आत्मबल. वे मानते थे कि बलवान इंसान ही मन का स्वामी बन सकता है. जैसे वे स्वयं अपने मन के स्वामी बने थे, वह जीवन भर हमेशा सकारात्मक रहते थे वह कभी भी नकारात्मक नहीं हुए, उनके जोशीले शब्दों और भाषणों ने पीढ़ियों तक युवाओं को प्रेरित करने के साथ–साथ प्रोत्साहित करना जारी रखा.....मेरे वीर हृदय युवकों, यह विश्वास रखो कि अनेक महान कार्य करने के लिए तुम लोगों का जन्म हुआ है. कुत्तों के भौंकने से न डरो और न ही स्वर्ग के वज्र से डरो. उठ खड़ हो जाओ और कार्य करते चलो. उठो, साहसी बनो, वीर्यवान बनो, सब उत्तरदायित्व अपने कन्धे पर लो....यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो. तुम जो कुछ सामर्थ्य या सहायता चाहो, सब तुम्हारे भीतर विद्यमान है, अतएव इस ज्ञानरूप शक्ति के सहारे तुम बल प्राप्त करो और अपने हाथ अपना भविष्य गढ़ डालो. अपनी वर्तमान अवस्था के जिम्मेदार है हम ही हैं और जो कुछ हम होना चाहें, उसकी शक्ति भी हम में ही हैं. यदि हमारी वर्तमान अवस्था हमारे ही पूर्व कर्मों का फल है, तो यह निश्चित है कि जो कुछ हम भविष्य में होना चाहते हैं, वह हमारे वर्तमान कर्मों द्वारा ही सिंचित और निर्धारित किया जा सकता है. वह चाहते थे कि युवा मन और शरीर दोनों स्तर पर सशक्त बलवान बने स्वामी विवेकानंद जी का दृढ़ता से मानना था कि समाज व राष्ट्र का भविष्य युवाओं के हाथों में निर्भर है, लेकिन युवाओं को सबसे पहले अपने स्वयं के 'मन' व शरीर की खोई हुई शक्तिपुंज को पहचान कर आत्मविश्वास जाग्रत करना होगा तभी वह समाज एवं राष्ट्र की समर्पित भाव से सेवा कर सकते हैं, उन्होंने सदैव अपने विचारों को भाषणों एवं लेखों के माध्यम से 'स्वयं महान् बनो और दूसरों को भी महान् बनाओ, और 'उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य पूरा न हो जाए' आदि का संदेश देकर तथा युवाओं में प्रेरणा का भाव जगाकर, उनमें आत्मचेतना का संचार किया. युवाओं को खोई हुई शक्ति से जगाया और उन्हें समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए प्रेरित किया. उन्होंने सबसे पहले युवाओं को शक्तिशाली–बलवान बनने की प्रेरणा दी और फिर अपने देश के अतित सनातन परम्परा पर गर्व करने व राष्ट्र एवं समाज की सेवा में खुद को समर्पित करने की प्रेरणा दी. हे मेरे युवक बन्धु. तुम बलवान बनो.....यही तुम्हारे लिए मेरा उपदेश है. गीता पाठ करने की अपेक्षा तुम्हें फुटबाल खेलने से स्वर्ग–सुख अधिक सुलभ होगा. मैंने अत्यन्त साहसपूर्वक ये बातें कही हैं और इनको कहना अत्यावश्यक है. कारण मैं तुमको प्यार करता हूँ कि कंकड़ कहाँ चुभा है. मैंने कुछ अनुभव प्राप्त किया है. बलवान शरीर से तुम गीता को अधिक समझ सकोगे. युवाओं को प्रेरित करने के लिए उनका मूल मंत्र, श्रद्धा. साहस, त्याग, सेवा आदि था. युवाओं के लिए स्वामी विवेकानन्द का महत्वपूर्ण संदेश था कि उन्होंने स्वयं पर तथा देश की पारम्परिक सनातन संस्कृति और मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिक दुनिया के मामलों में भागीदारी करने का आह्वान किया, युवाओं में गर्व की भावना पैदा की. उनके अनुसार, निर्भीकता ही प्रत्येक सफलता का कारण थी. उनके प्रेरक संदेशों का कई पीढ़ियों से भारतीय युवाओं पर महान् प्रभाव है. युवाओं के लिए, 'आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, निःस्वार्थत और श्रद्वा आदि ऐसे प्रेरक शब्द हैं, जो

उन्होंने युवा पीढ़ी के लिए निर्धारित किए थे. उन्होंने कहा, 'अगर तुम्हें अपने तैंतीस करोड़ देवी–देवताओं में विष्वास हैं.....और खुद में विष्वास नही है, तो तुम्हारे लिए कोई मुक्ति नही हैं खुद पर विष्वास करा और उस विष्वास पर उठा और मजबूत बनों, हमें इसी की जरूरत है।''

मनोचिकित्सक राजीव गुप्ता कहते हैं कि युवाओं में लक्ष्यहीनता के साथ नषे की बढ़ती प्रवृत्ति भी जिम्मेंदार हैं। लक्ष्यहीनता के माहौल ने युवाओं को इतना दिग्भ्रमित कर दिया हैं कि उन्हे सुझ ही नही रहा कि करना क्या हैं, हो क्या रहा हैं और आखिर उनका होगा क्या? धर्य की कमी, आत्मकेन्द्रित, नषा, लालच, दंभ, कामुकता तो जैसे असज उनके स्वभाव का अंग बन गई हैं। इसके लिए फिल्मों में ओटीटी प्लेटफार्म पर हिंसा व अष्लीलता को बढ़ाव देने वाले कार्यक्रम भी जिम्मेंदार हैं। केजीएफ, ड्रॉन जैसी फिल्में हो या मिर्जापुर या आश्रम जैसे ओटीटी प्लेटफार्म पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम युवाओं के दिमाग पर कब्जा जमा रहे हैं और युवा उनका अनुसरण कर अपराध की ओर उनमुख हो रहे है। विडंम्बना हैं कि हिंसा से ओतप्रोत कार्यक्रमों पर सरकारी नियंत्रण नही हैं जिससे युवा प्रेरित हो रहा हैं। यह एक चिंतनीय विषय है। ऐसी घटनाओं को लेकर तीखी प्रतिक्रियाऐं आती है और कुछ लोग आदतन पुलिस और सरकार को कोसते है तो कुछ उन तमाषबीनों को भी कायर करार देते हैं जिन्होने घटना को देखा पर अपने नागरिक दायित्व को नही निभाया। सवाल यह हैं कि वह समाज जो किसी भी घटना के लिए पुलिस और सरकार को जिम्मेंदार ठहरा देता हैं, कभी उसने खुद के भीतर झांकने की कोषिष की हैं ? हम हमारी आने वाली पीढ़ी को क्या विचार और आदर्ष दे रहे है। क्या कभी इसका ऑकलन किया हैं ? आजकल जैसे अपराध हो रहे हैं उनके पीछे कोई ठोस वजह नही आती कभी–कभी तो युवा सिर्फ दिखावे व समाज में अपनी ताकत दिखाने के लिए अपराध को अंजाम दे रहे हैं। इनमें से कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो उच्च वर्ग से प्रभावित होकर उनके जैसा दिखने करने और रहने के लिए ही अपराध की दुनिया को अंगीकार कर लेते हैं। इनके पास पर्याप्त आर्थिक समृद्धि हैं और सामाजिक सम्मान भी और वे अपराध करने के लिए मजबूर नही हैं, फिर भी षहरी क्षेत्र में घटने वाले अधिकांष अपराधों में इनका हाथ हैं ? गहराई से देखे तो इसके पीछे संस्कारहीनता और अहंकार हैं जो इन्हे अपनी मर्जी के खिलाफ कुछ भी नही बर्दाष्त करने देता। ये अपनी मर्जी से संचालित होते हैं। कोई क्या कर लेगा इसका गुमान हमेंषा उनके चेहरे और व्यवहार में झलकता है जिस पर कभी कोई ध्यान नही देता। इसमें इनका भी कोई दोष नही हैं। समाज ने ही इस तरह के व्यवहार समृद्धि,ताकत, जोड़तोड़ की राजनीति और चालाकी को सफलता के पैमाने के रूप में स्वीकार कर लिया है। कुसंस्कारों को कामयाबी माने वाला एक पूरा वर्ग खड़ा हो चुका है। जिसने अपना अलग संसार बसा रखा हैं यही सोच उनके अहंकार को पोषित करती है और उनकी औलादे निरंकुष हो जाती हैं। ये औलादे अपने आसपास के माहौल को, अपने मा–बाप को, अपने नाते रिष्तेदारों को अपने गुरूओं को किसी आदर्ष से संचालित होते नही देखते, उन्हे किसी नैतिकता का पालन करते नही देखते, उन्हे मर्यादित आचरण करता नही वाते तो वे भी वैसा ही अनुकरण करने लगते है। जो लोग अपनी तिकड़म से अपने रूतबे से अपराधियों का सहारा लेकर बढ़ाए गये बाहुबल से अपना घन संसार रचते हैं उनके बच्चों के इर्द–गिर्द भी एक भौतिक हवस का संसार अपने आप बस जाता है। फिर लड़के ऑलीषान मकान चाहते हैं एक लग्जरी कार, उसमें उनके साथ बैठने के लिए लड़की भी चाहते हैं और महफिल में जी हूजूरी करने वाले चार षोहदे भी। इस वर्ग की बालाओं का हाल भी जुदा नही होता। उन्हे भी षापिंग कि आजादी चाहिए। जागरूकता और आधुनिकता के नाम पर समय–असमय घूमने की आजादी चाहिए कम से कम एक ब्वायफ्रेंड़ तो होना ही चाहिए जिसके साथ वे डिस्को पार्टी में जाकर थिरक सके। जब उनके सामने सफलता के मायने ज्यादा से ज्यादा धन और ज्यादा से ज्यादा रोब रूतबे के रूप में प्रस्तुत किए जायेगे। तो फिर वे तो दिग्भ्रमित होगे ही। जब उनको पता होगा उनके आस–पास के माहौल में सही को गलत और गलत को सही कैसे बनाया जाता हैं, कानून को अपने पक्ष में कैसे किया जाता हैं, पुलिस और न्याय

को कैसे खरीदा जाता हैं, बड़े से बड़े अपराध करे कैसे सुरक्षित रहा जा सकता हैं तो वे किस बात से ड़रेगे ? अपराध को बढ़ावा देने वाला एक और पहलू हैं जिसे स्वतन्त्रता और अभिव्यक्ति की आजादी से जोड़ दिया गया है। निष्चित रूप से आधुनिक तकनीक ने हमारी समृद्धि और सुविधाओं और को विस्तार दिया हैं, लेकिन यह भी अकाट्य सत्य हैं कि उतनी ही द्रुतगति से अपराध और कुसंस्कारों का भी विस्तार हुआ है। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर फेसबुक और टवीट्र जैसी सोषल साइटों पर अष्लीलता और अभद्रता भरी पड़ी है। छोटे–बड़े का लिहाज भूलकर लोग वो सबकुछ लिख पढ़ रहे हैं जो केवल विचारों को दूषित ही करता हैं इसमें ढ़ेरो बड़े अच्छे घराने और ऊँचे दर्जे के लोग भी षामिल है। प्रवाह हमेंषा से नीचे की ओर से होता हैं जब इन जैसे लोग ऐसी हरकते करते हैं तो लोग इसे आसानी से ग्रहण करने की कोषिष करते है।

देष में कई इलाकों में नषें का कारोबार इस कदर जड़े जमा चुका हैं कि उसें समाप्त करना बहुत बड़ी चुनौती हैं तमाम् कोषिषों के बावूजूद पंजाब, हिमाचल आदि केकुछ इलाकों में तो ऐसे नषें की गिरफ्त में आकर युवाओं के असमय मौत के मुंह में समा जाने की घटनाऐं रूक नही रही। देष का षायद ही कोई महानगर हो, जहां ऐसे नषे के कारोबारियों ने जाल नही बिछा नही रखा हैं। ये कारोबारी युवाओं को अपना षिकार बनाते है। स्कूल–कॉलेजो में पढ़ने वाले युवाओं को नषे की लत लगाते है और वे जब इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं, तो वे इस जंजाल का हिस्सा बन जाते है। हेरोइन, चरस आदि जैसे नषे युवाओं के षरीर और दिमाग दोनों का इस कदर अक्षम बना देते हैं कि वे बिना इसके रह नही पाते कोई भी कल्याणकारी सरकार अपने युवा नागरिको को इस तरह नषें की गिरफ्त में आकर मौत को गले लगाते नही देख सकती। हालांकि नषें के कारोबार पर लगाम लगाने के लिए स्वापक नियंत्रण ब्यूरों यानि नारकोटिक विभाग हैं। वह नषे के संजाल पर लगातार नजर रखता हैं और उससे जुड़े लोगो की धर–पकडत्र कर उसके ताने–बाने को तोड़ने का प्रयास करता हैं। पर हकीकत यह हैं कि वह अब तक छोटे–मोटे आपूर्तिकर्ताओं, नषा करनेवालों को ही गिरफ्तार कर अपनी उपलब्धियां गिनाता रहा हैं, बड़े कारोबारी उसके चंगुल से बाहर ही रहे हैं। हाल ही में गुजरात के मुद्रा बंदरगाह पर अफगानिस्तान से लायी गई करीब तीन हजार किलो हेरोइन की खेप पकड़ी गई जिसकी कीमत लगभग तीन हजार करोड़ रूपए आंकी गई हैं। इस बात की कल्पना से भी सिहरन हो जाती हैं कि मुद्रा बंदरगाह पर हेरोइन की खेप अगर देष के विभिन्न हिस्सों में पहुंच गई होती तो कितने लोगो के खून में घुलकर उसका जीवन तहस–नहस करती।

फिल्म विष्लेषक इम्तियाज बताते हैं 'ड्रग्स, नषा, माफिया और वालीवुड का रिष्ता बरसों से रहा हैं।' वालीवुड के फिल्म गलियारों में यह आम बात थी कि फलां फिल्म में फलां ड्रग्स माफिया का पैसा लगा हैं। उस समय तमाम् सितारों के बारे में यह सुना जाता था कि कैसे किसी अंड़रवर्ल्ड के व्यक्ति के धमकाने के बाद वह किसी खास नायिका के साथ फिल्म में काम करने के लिए राजी हुआ हैं। 1990 के दषक में एक प्रेसवार्त्ता में पत्रकारों और कई नामी फिल्मकारों के बीच तीखी बहस और झड़प हो गई। मुद्दा था वॉलीवुड में अंड़रवर्ल्ड और ड्रग्स माफिया का पैसा लगता हैं। कई नामी सितारे उनके इषारे पर काम करते हैं। सत्तर के दषक में हाजी मस्तान ओर सोना मिर्जा के इष्क की खबरे सुर्खियों में थी। हाजी मस्तान की वजह से सोना को फिल्मों में काम मिलता रहा। खासकर उन फिल्मों में जिनमें हाजी मस्तान का पैसा लगता था। अस्सी के दषक में'राम तेरी गंगा मैली' फेम मंदाकनी और दाउद इब्राहिम के रोमांस की चर्चा रही। नब्बे के दषक की चर्चित नायिका ममता कुलकर्णी ने तो ड्रग्स माफिया लार्ड विक्की से षादी ही कर लीं तीन साल पहले मुंबइ के उपनगर ठाणे में ममता को ड्रग्स सप्लाई के जुर्म में गिरफ्तार किया गया। ममता का पति इन दिनों केन्या में जेल काट रहा हैं। इसके बाद मोनिका बेदी भी अंडरवर्ल्ड के नामी बंदे अबू सलेम के इष्क में अपनी जिंदगी के कई साल गंवा बैठी । इन नामों का जिक्र इसनिए क्योंकि बाद में वही नही इनके जैसे कई अभिनेता और अभिनेत्री नषे की लत के बाद पैसा कमाने के लिए अपने भाई बंधुओं को इसका आदी बनाने से बाज नही

आए। यहां बहुत आसानी से ड्रग्स मिल जाता है। ज्यादातर स्ट्रगलर अपना गम भुलाने से इसकी षुरूआत करते है, फिर इसके आदि हो जाते है। इतने सालों में कई सितारे ड्रग्स की वजह से पकड़े गए, मगर इन पर कोई कार्यवाही नही हुयी।

वर्तमान में जिस तरह से अष्लीलता को महिता मंडित किया जा रहा हैं वह सर्वथा अस्वीकार्य होना चाहिए। कुसंस्कारित युवा और स्वयं के असीमित और अनैतिक विचारों पर तहजीब का अंकुष लगाना होगा। ऐसे में कहा जा सकता हैं कि यदि समाज की मौजूदा परिस्थितियों से निपटना हैं तो सबसे पहले सफलता की परिभाषा बदलनी होगी। जो रौब–रूतबे, षक्ति और समृद्धि की नही उच्च विचारों, संस्कारों और उच्च आदर्षो की होगी। संस्कारवान परिवार ही संस्कारवान समाज का निर्माण करते है। किसी भी बच्ची के साथ दुर्व्यवहार की आलोचना या चंद अपराधियों के सलाखों के पीछे जाने से कोई क्रांतिकारी बदलाव नही आएगा। बदलाव तब आएगा जब हम बच्चों को बचपन से नैतिक षिक्षा देने की पैरवी करने की बजाय उन्हे सामाजिक सरोकारों की षिक्षा देगे। सरकार को इस ओर संजीदगी से सोचना होगा ओर स्वस्थ्र समाज के निर्माण के लिए प्रचार साधनों के कंटेंट पर अंकुष लगाने के साथ युवा पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर गढ़ने होगे तभी दिषाहीन युवा राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता भागीदारी निभा सकेगा।

नशीले पदार्थों के उत्पादन और उपभोग पर रोक लगाने के लिए दुनिया के हर देश में कड़े कानून हैं। नशीले पदार्थों की खरीद बिक्री पर नजर रखने के लिए मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो हैं। मगर हकीकत यह है कि ऐसे पदार्थों पर रोक लगाना तो दूर, दिनों–दिन इनकी खपत और कारोबार बढ़ते जा रहे हैं। चिंता की बात है कि अब नशीले पदार्थों की खरीद–बिक्री के लिए इंटरनेट का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। विएना स्थित अंतर्राष्ट्रीय स्वापक नियंत्रण ब्यूरो यानी आइएनसीबी ने अपनी पिछले साल की वार्षिक रिपोर्ट में बताया है कि भारत और दक्षिण एशिया में गैर कानूनी वस्तुओं की बिक्री करने वाली इंटरनेट संचालित दुकानों यानी 'डार्कनेट' के जरिए भारी पैमाने पर नशीले पदार्थों की तस्करी हो रही है। इसमें सोशल मीडिया का भी उपयोग किया जा रहा है। ये दुकानें ऐसे पदार्थों का महिमामंडन करने के लिए सामग्री भी प्रसारित करती हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि दवा की शक्ल में भी इन पदार्थों की बिक्री की जाती है। आइएनसीबी ने ऐसी कुछ दुकानों को चिह्नित कर उनकी सूची भी जारी की है। यह एक डरावना तथ्य है। मगर हैरानी की बात है कि ऐसी दुकानों पर प्रतिबंध लगाने के लिए अभी तक कोई व्यावहारिक कदम क्यों नहीं उठाया जा सका है। हमारे देश में नशीले पदार्थों ने इस कदर अपनी पैठ बना ली है कि बहुत सारे युवा इनकी लत का शिकार होकर अपनी सेहत चौपट कर रहे या असमय काल के गाल में समा रहे हैं। पंजाब में नशीले पदार्थों के दुष्प्रभाव की भयावह तस्वीरें किसी से छिपी नहीं हैं। अब अमीर और संभ्रांत वर्ग के जलसों में ऐसे नशीले पदार्थों का सेवन फैशन–सा बनता जा रहा है। बल्कि कई जगह तो विशेष रूप से ऐसे पदार्थों के सेवन के लिए ही चोरी–छिपे दावतें दी जाती हैं। नारकोटिक्स ब्यूरो कही–कही कुछ लोगों की धर–पकड़ कर कभी–कभार नशे के कारोबार पर अपनी सख्ती जाहिर करता है, पर हकीकत यही है कि इस कारोबार के मुख्य स्रोत तक उसकी पहुंच नहीं बन पाती। इसी का नतीजा है कि नशे के कारोबारी अब इस कदर बेखौफ नजर आते हैं कि दूसरे देशों से सैकड़ों किलो की मात्रा में नशीले पदार्थों की खेप मंगा लेते हैं। नशे का कारोबार इसलिए चिंता का विषय है कि यह न सिर्फ युवाओं का जीवन बर्बाद कर रहा है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर डाल रहा है। मगर सरकारे अभी तक इस कारोबार पर नकेल कसने में विफल ही साबित हुई हैं। इसके लिए दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है। मगर पंजाब में जिस तरह एक राजनेता को इस कारोबार में संलिप्त पाए जाने पर गिरफ्तार किया गया, उससे यह संकेत मिलता है कि इस कारोबार की जड़े राजनीति से भी खाद–पानी ले रही हैं। यह समझ से परे है कि जब आपत्तिजनक सामग्री परोसने वाली साइटें बंद की जा सकती हैं, तो नशे का कारोबार

करने वाली वेबसाइटों को बंद करने में भला क्या अड़चन हो सकती है। सरकार द्वारा तय किये गये रोजगार के इंतजाम भी नाकाफी सिद्ध हुए हैं जो युवाओं को भी दिषाहीन बना रहे हैं। दिषाहीनता की इस स्थिति में युवाओं की ऊर्जा का सकारात्मक दिषाओं की ओर मार्गन्तरण ओर भटकाव हो रहा हैं। लक्ष्यहीनता के माहौल ने युवाओं को इतना दिग्भ्रमित कर दिया हैं कि उन्हे सुझ ही नही रहा कि करना क्या हैं, हो क्या रहा हैं और आखिर उनका होगा क्या? धर्य की कमी, आत्मकेन्द्रित, नषा, लालच, दंभ, कामुकता तो जैसे असज उनके स्वभाव का अंग बन गई हैं। इसके लिए फिल्मों में ओटीटी प्लेटफार्म पर हिंसा व अष्लीलता को बढ़ाव देने वाले कार्यक्रम भी जिम्मेंदार हैं। केजीएफ, ड़ॉन जैसी फिल्में हो या मिर्जापुर या आश्रम जैसे ओटीटी प्लेटफार्म पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम युवाओं के दिमाग पर कब्जा जमा रहे हैं और युवा उनका अनुसरण कर अपराध की ओर उन्मुख हो रहे है।

संसार का कोई भी व्यक्ति अकेले जीवनयापन नही कर सकता समाज का साथ उसे चाहिए ही। व्यक्ति की उन्नति अवनति में परिवेष का बहुत बड़ा योगदान होता है। इसलिए जीवन में संगति का अत्यंत महतव हैं एक देषज कहावत हैं–संगति ही गुण उपजै, संगति ही गुण जाए। वास्तव में संगति का प्रभाव सीधे–सीधे हमारे जीवन पर पड़ता है। हमारी जैसी संगति होगी हमारे आचार–विचार वैसे ही हो जाते हैं। बुरी संगति हमारे गुणों को दीमक की तरह धीरे–धीरे खा जाती हैं। हमारे मनीषियों ने कहा हैं कि स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूंदे जब सीप में पड़ती हैं, तो वे मोती बन जाती हैं और जब सांप के मुंह में पड़ती हैं, तब विष बन जाती हैं संग और कुसंग का मानव जीवन पर ऐसा ही असर पड़ता है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा हैं, सुधरहीं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई। पारस पत्थर की संगति से जैसे लोहा सोना बन जाता हैं, ठीक से ही सतसंगति से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी बन जाते है। महिर्षि वाल्मिकी रत्नाकर नाम से एक ब्राह्मण थे कुसंगति में पड़कर वे डाकू बन गए, लेकिन जब वही डाकू जब देवर्षि नारद की संगति में आए तो तपस्वी बन गए और महिर्षि वाल्मिकी बनकर रामायण की रचना कर ड़ाली। इसी प्रकार डाकू अंगूलीमार महात्मा बुद्ध के संपर्क में आने के पष्चात् महान् संत बने और अहिंसक नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि आप हमें व्यक्ति की संगति दिखा दीजिए, मैं उसका भविष्य बता दूंगा। मनुष्य को बुरी संगति से बचना चाहिए। मनीषियों का मत हैं कि कुसंग का परित्याग ही एक तरह का सत्संग है। विष्व की सबसे युवा आबादी भारत में है। देष को अपने युवाओं को विभिन्न प्रकार की खेल संबधी गतिविधियों में षिक्षित और प्रषिक्षित करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। अनुसंधान और अभ्यास से पता चलता हैं कि खेल में युवाओं को षामिल करने से कई लाभ है जैसे स्वास्थ्य व कल्याण, आत्मष्विास, मानसिक स्वास्थ्य, प्रतिस्पर्धा की भावना, टीम के साथ काम करना, संघर्ष समाधान, अनुषासन, समय प्रबंधन, लक्ष्य और उपलब्धि, अभिरूचि, खिलाड़ियों का सम्मान और उनके प्रति सहानुभूति, नेतृत्व, सहिष्णुता, विष्वास, चौकन्ना रहना, आत्मसम्मान, चरित्र निर्माण, उच्च जोखिम वाले व्यवहार में कमी आना आदि युवाओं को खेल और फिट रहने से संबधित गतिविधियों में षामिल करने के कई आसान तरीके हैं, जैसे टहलना, दौड़ना, साइकिल चलाना तैराकी, जिम में कसरत करना और घर से बाहर मैदान में खेलना आदि। इन गतिविधियों के विभिन्न लाभ हैं जैसे –मनोप्रेरणा, कौषल विकास, षारीरिक श्रम द्वारा ऊर्जा स्तर कम करना, मोटापे का जोखिम कम करना ओर षरीर को अधिक आराम देने पर आधारित जीवनषैली में बदलाव लाना तथा षारीरिक श्रम को जीवनषैली में षामिल करना आदि।जनसंख्या लाभ की यह स्थिति अपने आप हकीकत में नही बदलने वाली इसके लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास करने होगे। भारतीय षिक्षा प्रणाली की कई मामलों में आलोचना की जाती रही है। कहा जाता हैं कि यह षिक्षा व्यवस्था रट कर अंक जुटाने को बढ़ावा देने वाली हैं यह विद्यार्थियों की सोच को विकसित नही होने देती जिससे विद्यार्थियों में कल्पनाषीलता, सृजनषीलता और उद्यमिता की भावना कम देखने को मिलती है। हो सकता हैं, अभी तो ज्यादातर विद्यार्थी पढ़ाई सिर्फ इस उद्वेष्य से करते है कि यह उन्हे नौकरी दिला सके। पर नौकरी

सबको कहां मिल पाती हैं ? देष में बेरोजगारी की स्थिति गंभीर बनी हुई हैं । अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर नही बन पा रहे है जितने की होने चाहिए। साथ ही यह भी सच हैं कि एक बडा वर्ग उन लोगो का है जिन्हे अपनी षिक्षा के हिसाब से बेहतर रोजगार में होना चाहिए था पर रोजी रोटी कमाने के लिए उन्हे समझौता करना पड़ा। एक ओर बात जिस पर कम ध्यान दिया गया हैं, वह कृषि पर अर्थव्यवस्था की निर्भरता कम होता जाना हैं कृषि में अब पहले से कम संख्या में लोग नियोजित हैं। भले ही कृषि में उत्पादन अधिक हो रहा हो बेरोजगारों की संख्या में कृषि से बाहर आए लोग भी जुड़ते जा रहे है। अगर सबके लिए रोजगार नही हैं और देष में बेरोजगारों के लिए सामाजिक सुरक्षा की कोई व्यवस्था नही है तो एक ही रास्ता दिखता हैं कि अधिक से अधिक लोग उद्यमी बने और पैरों पर खड़े हो। उद्यमी बनने से यहां मतलब उद्योगपति बनने से नही, बल्कि खुद का व्यवसाय षुरू करने से है। युवाओं में उद्यमिता की राह चुनने को प्रेरित कर हम उन्हे रचनात्मक दिषा में मोड़ सकते है बेरोजगारी के दुष्प्रभावों को कम कर सकते हैं और राष्ट्रीय आय का स्तर भी ऊॅचा उठा सकते है।

सन्दर्भ सूची

1.स्वामी विदेहात्मानंद, स्वामी विवेकानंद की पावन समृतियां, एड़वाइब आश्रम, कोलकता,

2 एन. रघुरामन, युवा भारत की नई पहचान, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली

3.त्रिलोकीनाथ सिन्हा, विष्व–वंद्य स्वामी विवेकानंद

4. एम. आई. राजस्वी, विष्व गुरू विवेकानंद, किंडल प्रकाषन

5. सर श्री, स्वामी विवेकानंद भारत गुरूषिष्य परम्परा की मषाल, मंजुल पब्लिकेषन हाउस प्राइवेट लिमिटेड़ ,

6.पुखराज जैन, भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन आगरा

7.सामान्य ज्ञान दर्पण,

8.योजना

9.कुरूक्षेत्र

10. जनसत्ता

11. हिन्दुस्तान